VETERINARY TODAY

Popular Article
ISSN: 2583-8288

दुधारू पशुओं का गर्मी के मौसम से वचाब

नदीम शाह*, विजय सिंह, नाजिम अली, अहमद फहीम एवं आशुतोष त्रिपाठी

सरदार वल्लभभाई पटेल यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर साइंस एंड टेक्नोलोजी, मेरठ

गर्मियों के मौसम में विशेषकर मई और जून के महीने में वातावरण का तापमान अत्यधिक होने के कारण इसका सीधा असर दुधारू पशुओं (गाय, भैंस, बकरी आदि) के उत्पादन पर पड़ता है। यह दुधारू पशु समतापी होने के कारण इनको अपने शरीर के तापमान को सामान्य बनाये रखने के लिए अनुकूलतम ऊष्मा छय करना होता है जो की वातावरण के तापमान , हवा की गति और उसमे नमी पर निर्भर करता है।

तापघात (हीटस्ट्रोक)

यदि पशु गर्मी के मौसम में अपने शरीर का तापमान सामान्य बनाये रखने में विफल हो जाता है तो इसे हीटस्ट्रोक कहा जाता है। अधिक दूध देने वाले पशुओं में इसका प्रभाव अधिक होता है क्योकि, अधिक दूध देने वाले पशुओं में ऊष्मा का उत्पादन भी अधिक होता है।

हीटस्ट्रोक (तापघात) के लक्छण

- पशुओं का सुस्त हो जाना
- पशुओं का मुँह खोल के सांस लेना
- पशु के मुँह से लार का निकलते रहना
- पशु के सांस गति और शरीर का तापमान बढ़ जाना
- नाक नथुने का सुखना
- मूत्र की मात्रा का काम हो जाना

तापघात से बचाव के उपाय

आहार प्रबंधन:

पशुओं को चारा - दाना रात्रि में या देर शाम को 7 बजे और सुबह 5 - 6 बजे के आस पास दे, क्योंकि चारा खाने के बाद पशु के शरीर में ऊष्मा का उत्पादन होता है। अत: दिन में विशेषकर दोपहर में चारा दाना बिलकुल नहीं दे।

हरा चारा:

पशुओं को आहार में हरा चारा अधिक से अधिक दे, इससे शरीर को आवश्यक खनिज तत्व एवं पानी की जरुरत पूरी होती रहेगी और हरा चारा पचाने में भी आसान होता है।

सूखे चारे की मात्रा:

पशुओं के आहार में सूखे चारे की मात्रा काम रखे क्योकि सूखे चारे के पाचन से जो वाष्पशील वसा अम्ल बनते है उनसे अधिक ऊष्मा उत्पन्न होती है अत: आहार दाने की मात्रा अधिक रखनी चाहिए।

खनिज लवण :

पशुओं के आहार में करीब 50 ग्राम नमक और 40 - 50 ग्राम खनिज लवण जरूर दे। अधिक गर्मी के मौसम में पशु के आहार में 30 ग्राम सोडियम बाई कार्बोनेट (खाने का सोडा) दे।

पीने का पानी:

पीने का पानी शुद्ध, शीतल और हमेशा उपलब्ध रहना चाहिए। पीने के पानी को गर्म स्थान पर न रखे और पशु को दिन में कम से कम 3 से 4 बार पानी पीने को दे। नियमित रूप से पानी प्रदान करने से पशुओं का तापमान नियंत्रित रहता है।

आवास प्रबंधन:

- पशुओं का बाड़ा खुला और हवादार होना आवश्यक है जिससे हवा का आवागमन बना रहे।
- तापघात का सबसे अधिक असर आद्रता अधिक होने पर होता है इसलिए पशुशाला के ऊपर की छत के पास का भाग आवश्यक रूप से खुला होना चाहिए।
- पशुशाला में टाट बोरियां आदि भिगो के लगानी चाहिए।
- पंखो और पानी के फव्वारों का उपयोग भी तापमान को नियंत्रित करने में किया जा सकता है। कूलर का उपयोग उसी स्थति में करे जब हवा आर पार जा सकती हो।
- पशुशाला की छत पर बचा हुआ चारा या घास फूस आदि डाल कर रखनी चाहिए जिससे छत ठंडी रहे।
- पशुओं को सुबह शाम नहलाना चाहिए और उनके सिर पर पानी अवश्य डालना चाहिए
- भैंसों में तापघात की सम्भावना अधिक होती है क्योकि उनके शरीर का रंग काला और बाल भी कम होते है इसलिए उनको दिन में दो बार जरूर नहलाना चाहिए। और अगर संभव हो तो दिन के समय में भेंसो को तालाब में छोड़ना चाहिए।

निष्कर्ष

गरमी के मौसम में दुधारू पशुओं की देखभाल और सुरक्षा एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो उनके स्वास्थ्य और उत्पादन को सुनिश्चित करने में मदद करती है। ऊष्माए वायुमंडलए और पानी के

प्रबंधन के साथ ही उनके आहार का भी ध्यान रखना आवश्यक है। गर्मियों में उनकी ऊष्मा छाया करनाए सुखानाए और आवास का योगदान उनके स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है। पानी की उपलब्धता की सुनिश्चितताए खनिज लवणों का सही मात्रा में देनाए और पीने के पानी का नियमित आपूर्ति भी आवश्यक है। तापघात से बचाव के लिए उचित आहार प्रबंधन करना जरूरी हैए ताकि पशु का तापमान सामान्य बना रहे। आवास की अच्छी योजना और पानी के फव्वारों का उपयोग भी उनके सुरक्षा को बढ़ावा देते हैं। गर्मी के मौसम में दुधारू पशुओं के साथ व्यवहार करते समय उपरोक्त सुझावों का पालन करने से उनकी स्वास्थ्य सुरक्षित रहेगी और उनके उत्पादन में सुधार हो सकेगा। इससे आपके पशुओं की सेहत और उत्पादन दोनों ही में सुधार होगा।

ISSN:2583-8288